साहित्यसुधा
साहित्यकारों की वेबपत्रिका
साहित्यकारों की रचना स्थली
वर्ष: 3, अंक 54, फरवरी(प्रथम) , 2019

वृन्दावन अर्थात् विचारों का वृन्दावन!

लेखक: पद्मश्री डॉ.गुणवंतभाई शाह
अनुवादक: डॉ.रजनीकान्त एस.शाह

यह सृष्टि विचारों से बनी हुई है
- प्लेटो

एक पुरुष लेखक अपने पुरुष पति को पुस्तक अर्पण करे,क्या यह बात हिला देनेवाली नहीं है?
मनुष्य को विचारों की कंपकंपी हो क्या यह कोई साधारण बात है?
प्लेटो की बात गलत नहीं है। हमारी समग्र सृष्टि विचारों से बनी हुई है।

हमारी लाड़ली पृथ्वी पर सदैव विचारों का प्रभाव रहा है। रामराज्य से क्या तात्पर्य? राम आखिरकार तो एक विचार का ही तो नाम है। विचार कभी मरता नहीं है,इसलिए बारबार कहता आया हूँ: विचार अमर है, इसलिए राम अमर हैं। रामजी के विचार का मध्यबिंदु अर्थात् मर्यादा। राम मर्यादा पुरुषोत्तम कहलाये। सूर्य मर्यादा का पालन करता है। सागर मर्यादा का पालन करता है। आकाशगंगा भी मर्यादा का पालन करती है और असंख्य तारे भी अपनी अपनी भ्रमणकक्षा में रहकर भ्रमण करते हैं और इस प्रकार मर्यादा का पालन करते हैं। मनुष्य को भी अपनी मर्यादा में रहना चाहिए। मर्यादापालन अर्थात् अत्यंत सूक्ष्म कक्षा पर विवेक का जतन। विवेक का जतन किया जाये तो पृथ्वी का जतन होगा। विवेक का जतन होगा तो विश्वशान्ति का जतन अपनेआप होगा।

राजनीतिक एवं सामाजिक विचारों द्वारा सामाजिक क्रांति होती रहती है। विवेक का असली वाहन तो शिक्षा है।`अस्पृश्यता निवारण' एक विचार का ही नाम है। महात्मा गांधी ने उस विचार के बलबूते पर समाज परिवर्तन के यज्ञ का प्रारम्भ किया। अभी भी अस्पृश्यता पूर्णरूपेण गई नहीं है। यह उस बात का संकेत है, कि

गांधीजी की 150वीं जन्मजयंती के वर्ष में भी हम अपढ़ हैं और बेशर्म भी! बरसों पूर्व मैं अपनी संतानों के लिए नयी नयी नयी पुस्तकें खरीदकर लाता था। विदेश जाते वक्त सांताक्रूज एयरपोर्ट पर से पुस्तकें खरीदकर दुकानदार को ही उन पुस्तकों को घर भेज देने की सूचना देता था। इस प्रकार बालकों के लिए प्रेषित पुस्तक का शीर्षक था- `There is no such Place As Far Away'-लेखक: रिचर्ड बेक।(एयरपोर्ट,प्रेषण तारीख: 20-04-1982) यह जर्जरित पुस्तक अभी मेरे हाथ में है।

अब बात बदल गई है। अब बड़ी हुई सन्तानें मुझे अच्छी अच्छी पुस्तकें देती हैं। बिटिया ने कुछ दिन पूर्व मुझे तीन पुस्तकें भेज दी। लेखक का नाम है: Yuval Noah Harari। यह लेखक आला दर्जे के दार्शनिक हैं। उनके द्वारा लिखित तीन पुस्तकें यदि पढी जाएँ तो शायद चक्कर आ जाये, ऐसा होना संभव है। इन तीनों पुस्तकों के नाम इस प्रकार हैं: १.Sapiens: A Brief History of HumanKind.२.Homo Deus: A Brief History of Tomorrow तथा ३. 21 Lessons For the 21st Century। पहली पुस्तक में बीते हुए अतीत का दर्शन है। दूसरी पुस्तक में मानवजाति के भविष्य का दर्शन है और तीसरी पुस्तक में वर्तमानकाल की बात हुई है। अब लेखक का सही परिचय मैं दूं? पुस्तक के अर्पण संदेश के शब्द हैं: `To my husband Itzik।' पाठक के मन में विचार आ सकता है,कि लेखिका अपने पति को पुस्तक अर्पण कर रही है,परंतु बात कुछ अलग ही है। लिखनेवाला पुरुष है तो फिर वह अपने पति को पुस्तक अर्पण करे-यह कैसा? लेखक Gay है और सजातीय(समलैंगिक) सेक्स हो ऐसे युगल विवाह करे, इस बात की कोई ताजुबी यूरोप -अमरीका में रही नहीं है। दो पुरुष घरसंसार की शुरुआत करे, उसमें भी एक पति हो और दूसरा पत्नी हो,ऐसा खेल रचा जाता है। अब अर्पण संदेश की बात समझ में आ जायेगी। लेखक का सही परिचय एक ही धड़ल्ले में!

प्रथम किताब की बात संक्षेप में करूंगा। `होमोसेपियन्स' का अर्थ होता है,सयाना व्यक्ति। एक प्रजाति के रूप में, हमारा भव्य भूतकाल कैसा था? पेड़ पर रहनेवाले इन्सिग्निफिकेंट बंदर में से हम इस पृथ्वी पर विहार करने लगे हैं। लेखक कहते हैं कि ७०हजार और ३०हजार वर्ष पूर्व एक बहुत बड़ा kognitive रिवोल्यूशन

हुआ और सोचने की तथा प्रत्यायन(कम्युनिकेशन) की कुशलता में मनुष्य ने विकास में गतिवृद्धि की थी। तत्पश्चात् खेती का आविष्कार हुआ उसके बाद कृषिक्रांति हुई। तत्पश्चात् वैज्ञानिक क्रांति पर्यंत विकास हुआ ऐसा कहा जा सकता है। अनाज का व्यापारी बड़े बोरे से हथेली में रखकर दहेरादून बासमती चावल दिखाता है,उस प्रकार मैं मात्र कुछ ही दाने पाठकों के समक्ष रख रहा हूँ।

`होमोसेपियन्स' का भविष्य कैसा होगा? लेखक एक स्थान पर कहता है: `मृत्यु के अंतिम दिन आ पहुंचे हैं। मृत्यु एक टेकनिकल प्रोब्लेम है,जो भविष्य में हल हो जानेवाला है। हम `होमोसेपियन्स' में से HomoDeus (God) बनने की दिशा में बढ़ रहे हैं।' इस बात को मानना मुश्किल है,फिरभी लेखक उसे इस कुशलता के साथ पेश कर रहा है,कि हम उस बात को सच मान ही लें। मानवत्व से देवत्व की दिशा में यात्रा के विषय में पढ़ने का आनंद मिलता है।

तीसरी पुस्तक में 21वीं शताब्दी की अद्भुत बातें हुई हैं। उसमें `आर्टिफ़िशियल इंटेलिजन्स' की और `मशीन लर्निंग' की रंगरंगी बातें आती हैं। साथ ही आती हैं एल्गोरीधम और बिग डेटा एनालिटिक्स की बातें।(वडोदरा के पूर्व मेयर और मूलत: लोकभारती के विद्यार्थी श्री भरत डांगर को कुछ ही समय पूर्व `आर्टिफ़िशियल इंटेलिजन्स' जैसे विषय पर म.स.यूनिवर्सिटी. वडोदरा की ओर से पीएच.डी. की डिग्री प्राप्त हुई है।) लेखक का तो यहाँ तक कहना है, कि: `इन्फोर्मेटिक्स,बायो-एंजिनियरिंग और बायो-टेक्नोलोजी हमें उस हद तक बदल सकती है कि भविष्य में हम खुद को नहीं पहचान सकेंगे!' इन्फोटेक और बायोटेक में हो रहे अनुसन्धान हमारी राजनीतिक और सामाजिक जड़ों को यहाँ तक हिला देंगे कि हम उन सबको कहाँ तक अपना सकेंगे-यह एक बड़ी चुनौती है।

इन तीन पुस्तकों को पढ़कर मुझे लगा कि मेरी उम्र आज जो है,उससे 20 या 30 वर्ष छोटी होती तो! तो शायद मेरी मृत्यु की दादागिरी कम होती! ज्यादा समझ में नहीं आये ऐसी इन तीनों पुस्तकों में विचारों का एक सुंदर तथापि डरावना वृन्दावन रचित हुआ है। परिवर्तन की तेजी हमें थरथरा दे ऐसी भयावह लगती है। एक पुरुष लेखक अपने पुरुष पति को पुस्तक अर्पित करे- क्या यह बात

भी थरथरा देनेवाली नहीं है? मनुष्य को विचारों की कंपकंपी हो, क्या यह सामान्य बात है? प्लेटो की बात गलत नहीं है। हमारी समग्र सृष्टि विचारों से बनी हुई है।

<u>परिणाम</u>

सपनों के द्रव्य में से
हम सब सृजित हुए हैं जी,
छोटी सी यह जिंदगी,
तो नींद का आकार जी!

-`द टेम्पेस्ट'(शेक्सपियर द्वारा रचित नाटक)
प्रवेश दृश्य-१ में बोली जा रही पंक्तियाँ।

कृपया रचनाकार को मेल भेज कर अपने विचारों से अवगत करायें